

CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN  
SURAT.

Manuscripts Library

S.D.P.B.

Coll. No. 427

Title Viṣṇu Sahasra nāma



CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN, SURAT

*Shastri Dinmanishankar Pustak-Bhandara*

No. : 427. Subject : Stotra

Title : Viṣṇu sahastra nāma

Author : — Scribe : Kamunashankar

Date of the work : — Date of the Ms. : V.5.9522

Place of the work : — Place of the Ms. : —

Size : 6.3" by 4" Extent : 26 fol.

Language : Sanskrit Script : Devanāgarī

Remarks : —



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथ विष्णुसह  
स्रनामावलिः ॥ ॥ ॐ विश्वाय नमः ॥ १ ॐ  
विष्णवे ॥ २ ॐ वषट्काराय ॥ ३ ॐ भूतन  
यनवत्प्रभवे नमः ॥ ४ ॐ भूतलतेनमः ॥ ५  
ॐ भूतचृतेनमः ॥ ६ ॐ भावाय ॥ ७ ॐ भूता  
त्मने नमः ॥ ८ ॐ भूतनावनाय ॥ ९ ॐ प्रता  
त्मने ॥ १० ॐ परमात्मने ॥ ११ ॐ मुक्तानां प

१

रमागतेनमः ॥ १२ ॐ अव्ययाय ॥ १३ ॐ पुरु  
षाय ॥ १४ ॐ साक्षिणे ॥ १५ ॐ हेतुज्ञाय ॥  
१६ ॐ अक्षराय ॥ १७ ॐ योगाय ॥ १८ ॐ यो  
गविदोनेत्रेनमः ॥ १९ ॐ प्रधानपुरुषेश्वरा  
य ॥ २० ॐ नारसिंहवपुषेनमः ॥ २१ ॐ श्री  
मतेनमः ॥ २२ ॐ केशवाय ॥ २३ ॐ पुरुषोत्त  
माय ॥ २४ ॐ सर्वाय ॥ २५ ॐ शर्वाय नमः ॥



२९ उं शिवाय नमः ॥ २७ उं स्थाणवे ॥ २८ उं भू  
तादये ॥ २९ उं निधिरव्ययाय नमः ॥ ३० उं  
संभवाय ॥ ३१ उं भावनाय ॥ ३२ उं भर्तृनि  
मः ॥ ३३ उं प्रभवाय ॥ ३४ उं प्रभवे नमः ॥ ३५  
उं ईश्वराय ॥ ३६ उं स्वयंभुवे ॥ ३७ उं शंभ  
वे नमः ॥ ३८ उं आदित्याय ॥ ३९ उं पुष्करा  
हाय नमः ॥ ४० ॥ उं महास्वनाय नमः ॥ ४१ ॥ २

उं अनादिनिधनाय ॥ ४२ उं धात्रे नमः ॥ ४३  
उं विधात्रे ॥ ४४ उं धात्रुरुत्तमाय ॥ ४५ उं  
अप्रमेयाय ॥ ४६ उं रुषीकेशाय ॥ ४७ उं  
पद्मनाभाय ॥ ४८ उं अमरप्रभवे ॥ ४९ ॥  
उं विश्वकर्माणे ॥ ५० उं मनवे नमः ॥ ५१ उं त्व  
ष्ट्रे नमः ॥ ५२ उं स्रुविष्टाय नमः ॥ ५३ स्रुवि  
ष्टाय नमः ॥ ५४ उं अग्राह्याय नमः ॥ ५५ ॥



उंशाश्वताय०॥५५॥ उंलक्ष्मायनमः॥५७॥ उंलो  
हिताहाय०॥५८॥ उंप्रतर्दनाय०॥५९॥ उंप्र  
भूताय०॥६०॥ उंत्रिककुक्षामेनमः॥६१॥ उं  
पवित्राय०॥६२॥ उंमंगलपराय०॥६३॥ उंइशा  
नाय०॥६४॥ उंप्राणदाय०॥६५॥ उंप्राणाय०॥  
६६॥ उंज्येष्ठाय०॥६७॥ उंश्रेष्ठायनमः॥६८॥ उं  
प्रजापतयेनमः॥६९॥ उंहिरण्यगर्भाय०॥७०॥ ३

उंभृगर्भाय०॥७१॥ उंमाधवाय०॥७२॥ उंमधु  
सूदनाय०॥७३॥ उंइश्वराय०॥७४॥ उंविक्र  
मिणेनमः॥७५॥ उंधविनेनमः॥७६॥ उंमे  
धाविनेनमः॥७७॥ उंविक्रमाय०॥७८॥ उंक  
माय०॥७९॥ उंअनुत्तमाय०॥८०॥ उंदुराधवा  
यनमः॥८१॥ उंलतज्ञाय०॥८२॥ उंलतयेन  
मः॥८३॥ उंआत्मवतेनमः॥८४॥ उंसुरेशाय०॥



८५। शरणाय०। ८६। उं शर्मणेनमः। ८७। उं  
विश्वरेतसेनमः। ८८। उं प्रज्ञानवाय०। ८९।  
उं अक्षेनमः। ९०। उं संवत्सराय०। ९१। उं  
व्याजायनमः। ९२। प्रत्ययायनमः। ९३।  
उं सर्वदर्शनाय०। ९४। उं अजाय०। ९५। उं  
सर्वेश्वराय०। ९६। सिद्धायनमः। ९७। उं सि ४  
द्धयेनमः। ९८। उं सर्वदिये०। ९९। उं अच्यु

ताय०। १००। उं वृषाकपये०। १०१। उं अमेया  
त्मने०। १०२। उं सर्वयोगविनिस्तृताय०। १०३।  
उं वसवेनमः। १०४। उं वसुमनसेनमः। १०५।  
उं सत्यायनमः। १०६। उं समात्मनेनमः। १०७।  
उं समिताय०। १०८। उं समायनमः। १०९। उं अ  
मोघाय०। ११०। उं पुंडरीकाक्षाय०। १११। उं वृ  
षकर्मणे०। उं वृषाक्षते०। उं रुद्राय०। उं



बहुशिरसे०। उंब्रवे०। उविश्वयोनये०॥  
उचिश्रवसे०। उअमृताय०। उशाश्वतस्त्रा  
णवे०॥२०॥ उवरारोहाय०। उमहातपसे०॥  
उसर्वगाय०। उसर्वविज्ञानवे०। उविश्वक्सेना  
य०। उजनार्दनाय०। उवेदाय०। उवेदविदे०।  
उअयंगाय०। वेदांगाय०॥३०॥ उवेदविदे०।  
उकवये०। उलोकाध्यक्षाय०। उसुराध्यक्षा ५

य०। उधर्माध्यक्षाय०। उलतास्तताये०। उ  
चतुरात्मने०। उचतुर्व्यूहाय०। उचतुर्दंष्ट्राय०।  
उचतुर्भुजाय०। उभ्राजिस्तवे०। उभोजनाय०।  
उभोक्त्रे०। उसहिस्रवे०। उजगदादिजाय०।  
उअनघाय०। उविजयाय०। उजेत्रे०। उविश्व  
योनये०। उपुनर्वसवे०॥५०॥ उउपेदाय०। उ  
वामनाय०। उप्रांशवे०। उअमोघाय०। उअ



चयेनमः। ऊर्जिताय०। उं अतींद्रियाय०।  
उं संग्रहाय०। उं सगयि०। उं धृतात्मने०। उं  
नियमाय०। उं यमाय०। उं वेद्याय०। उं वेद्या  
य०। उं सदायोगिने०। उं वीरघ्ने०। उं माधवा  
य०। उं मधवे०। उं अतींद्रियाय०। उं महामा  
याय०। ७०। उं महोत्साहाय०। उं महाबलाय०।  
उं महाबुद्धये०। उं महावीर्याय०। उं महाशक्ते

६

ये०। उं महाद्युतये०। उं अनिदेश्यवपुषे०। उं  
श्रीमते०। उं अमेयात्मने०। उं महादिधुमै०। ८०।  
उं महेश्वासाय०। उं महानेत्रे०। उं श्रीनि  
वासाय०। उं सतांगतये०। उं अनिरुद्धाय०। उं  
सुरानंदाय०। उं गोविंदाय०। उं गोविंदोपतये०।  
उं मरीचये०। उं दमनाय०। उं हंसाय०। उं सुप  
र्णाय०। उं भुजगोत्तमाय०। उं हिरण्यनाभाय०।

९



ॐ सुतपसे० ॥ ॐ पद्मनाभाय० ॥ ॐ प्रजापतये० ॥  
ॐ अमृत्यवे० ॥ ॐ सर्वदृशे० ॥ ॐ सिंहाय० ॥ २०० ॥ ॐ  
संधात्रे० ॥ ॐ संधिमंते० ॥ ॐ स्थिराय० ॥ ॐ प्रजाय० ॥  
ॐ उर्मर्षणाय० ॥ ॐ शास्त्रे० ॥ ॐ विश्रुतात्मने० ॥ ॐ सु  
रारिघ्ने० ॥ ॐ गुरवे० ॥ ॐ गुरुत्तमाय० ॥ १० ॥ ॐ धाम्ने० ॥  
ॐ सत्याय० ॥ ॐ सत्यपराक्रमाय० ॥ ॐ निमिषाय० ॥ ७  
ॐ अनिमिषाय० ॥ ॐ स्रष्टृणे० ॥ ॐ वाचस्पतिरु

दारधिये० ॥ ॐ अग्रण्ये० ॥ ॐ ग्रामण्ये० ॥ ॐ श्री  
मते० ॥ २० ॥ ॐ न्यायाय० ॥ ॐ नेत्रे० ॥ ॐ समीरण  
ाय० ॥ ॐ सहस्रमूर्ध्ने० ॥ ॐ विश्वात्मने० ॥ ॐ सहस्रा  
हाय० ॥ ॐ सहस्रपदे० ॥ ॐ आवर्तनाय० ॥ ॐ  
निवृत्तात्मने० ॥ ॐ संवृताय० ॥ ३० ॥ ॐ संप्रमर्दना  
य० ॥ ॐ अहःसंवर्तकाय० ॥ ॐ वक्रये० ॥ ॐ अ  
निलाय० ॥ ॐ धरणीधराय० ॥ ॐ सुप्रसादाय० ॥



ॐ प्रसन्नात्मने० ॐ विशदृषे० ॐ विश्वभुजे०  
ॐ विनवे० ॐ सत्कर्त्रे० ॐ सत्कृताय० ॐ साध  
वे० ॐ उज्ज्वले० ॐ नारायणाय० ॐ नाराय०  
ॐ असंख्येयाय० ॐ अप्रमेयात्मने० ॐ विशि  
ष्टाय० ॐ शिष्टस्ते० ॐ सुचये० ॐ सिद्धार्था  
य० ॐ सिद्धसंकल्पाय० ॐ सिद्धिदाय० ॐ सि  
द्धिसाधनाय० ॐ वृषादिले० ॐ वृषनाय० ॐ

विक्रमे० ॐ वृषपर्वणे० ॐ वृषोत्तराय० ॐ द  
वर्द्धमानाय० ॐ विविक्ताय० ॐ श्रुतिसागराय०  
ॐ सुभुजाय० ॐ उर्ध्वराय० ॐ वाग्मिने० ॐ  
महेंद्राय० ॐ वसुदाय० ॐ वसवे० ॐ नैक  
रूपाय० ॐ बृहद्रूपाय० ॐ शिपिविष्टाय०  
ॐ प्रकाशनाय० ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय०  
ॐ प्रकाशात्मने० ॐ प्रतापनाय० ॐ वृद्धाय० ॐ



स्पष्टाक्षराय०। उंमंत्राय०। उंचंद्रांशवे०। उं  
भास्करद्युतये०। उंअमृतांशुवाय०। उंभा  
नवे०। उंशशिबिंदवे०। उंसुरेश्वराय०। उंश्रौ  
षधाय०। उंजगतःसेतवे०। उंसत्यधर्मपरा  
क्रमाय०। उंभूतनयनवनाथाय०। उंपवना  
य०। उंपावनाय०। उंअनलाय०। उंकामघ्ने०।  
उंकामलते०। उंकांताय०। उंकामाय०। उंकाम

प्रदाय०। उंप्रनवे०। उंयुगादिलते०। उंयुगाव  
र्तय०। उंनैकमायाय०। उंमहाशनाय०। उंअ  
दृश्याय०। उंव्यक्तरूपाय०। उंसहस्रजिते०। उंअ  
नंतजिते०। उंइष्टाय०। उंविशिष्टाय०। उंशिष्टे  
ष्टाय०। उंशिखंडिने०। उंनकुषाय०। उंवृषाय०।  
उंक्रोधघ्ने०। उंक्रोधलत्कर्त्रे०। उंविश्वबाहवे०।  
उंमहीधराय०। उंअच्युताय०। उंप्रथिताय०। उं



प्राणाय०। उं प्राणदाय०। उं वासवानुजाय०।  
उं अर्पानिधये०। उं अधिष्ठानाय०। उं अर्प  
मन्नाय०। उं प्रतिष्ठिताय०। उं स्कंदाय०। उं स्कं  
दधराय०। उं धुर्याय०। उं वरदाय०। उं वायु  
वाहनाय०। उं वासुदेवाय०। उं बृहन्नानवे०।  
उं आदिदेवाय०। उं पुरंदराय०। उं अशोकाय०। १०  
उं तारणाय०। उं ताराय०। उं शूराय०। उं शौरये०।

उं जनेश्वराय०। उं अनुकूलाय०। उं शताव  
त्तयि०। उं पद्मिने०। उं पद्मनिनेहाणाय०। उं  
पद्मनानाय०। उं अरविदाय०। उं पद्मग  
नयि०। उं शरीरभृते०। उं महर्षये०। उं रुद्रा  
य०। उं रुद्रात्मने०। उं महोत्तये०। उं गरुडध  
जाय०। उं अनुलाय०। उं शरभाय०। उं नीमा  
य०। उं समयज्ञाय०। उं रुविर्हरये०। उं सर्व



लक्ष्मणलक्ष्मणाय०। उं लक्ष्मीवते०। उं समि  
तिंजयाय०। उं विहाराय०। उं रोहिताय०।  
उं मागयि०। उं हेतवे०। उं दामोदराय०। उं स  
हाय०। उं महीधराय०। उं महाभागाय०।  
उं वेगवते०। उं अमिताशनाय०। उं उद्गवाय०।  
उं होनणाय०। उं देवाय०। उं श्रीगर्भाय०। उं प  
रमेश्वराय०। उं करणाय०। उं कारणाय०। उं

११

कर्त्रे०। उं विकर्त्रे०। उं गहनाय०। उं गुहाय०।  
उं व्यवसायाय०। उं व्यवस्थानाय०। उं संस्थाना  
य०। उं स्थानदाय०। उं ध्रुवाय०। उं परस्वये०। उं  
परमस्पष्टाय०। उं उष्टाय०। उं पुष्टाय०। उं पु  
नेहणाय०। उं रामाय०। उं विरामाय०। उं विर  
जाय०। उं मागयि०। उं नेयाय०। उं नयाय०। उं अ  
नयाय०। उं वीराय०। उं शक्तिमतां श्रेष्ठाय०। उं ध



मयि०।ॐ धर्मविदुत्तमाय०।ॐ वैकुण्ठाय०।ॐ पु  
रुषाय०।ॐ प्राणाय०।ॐ प्राणदाय०।ॐ प्रण  
वाय०।ॐ पृथ्वे०।ॐ हिरण्यगर्भाय०।ॐ शत्रुघ्ना  
य०।ॐ व्यासाय०।ॐ वायवे०।ॐ अधोक्ष्णाय०।  
ॐ रुतवे०।ॐ सुदर्शनाय०।ॐ कालाय०।ॐ प  
रमेश्विने०।ॐ परियहाय०।ॐ उग्राय०।ॐ सं  
वसराय०।ॐ दक्षाय०।ॐ विश्रामाय०।ॐ विश्व

१२

दक्षिणाय०।ॐ विस्ताराय०।ॐ स्थावरस्थावे  
०।ॐ प्रमाणाय०।ॐ बीजमव्ययाय०।ॐ अथयि  
०।ॐ अनर्थयि०।ॐ महाकोशाय०।ॐ महानोगाय०।  
ॐ महाधनाय०।ॐ अनिविस्मय०।ॐ स्तुविष्टाय०।  
ॐ नुवे०।ॐ धर्मयूपाय०।ॐ महामखाय०।ॐ नक्ष  
त्रनेमये०।ॐ नक्षत्रिणे०।ॐ क्षमाय०।ॐ क्षामाय०।  
ॐ समीहनाय०।ॐ यज्ञाय०।ॐ ईश्याय०।ॐ महेन्द्राय०



य०। उं कृतवे०। उं सत्राय०। उं सतांगतये०। उं  
सर्वदिशिने०। उं विमुक्तात्मने०। उं सर्वज्ञाय०।  
उं ज्ञानायोत्रमाय०। उं सुव्रताय०। उं सुसुखाय०।  
उं सुहृमाय०। उं सुघोषाय०। उं सुखदाय०। उं  
सुहृदे०। उं मनोहराय०। उं जितक्रोधाय०। उं वी  
रवाहवे०। उं विदारणाय०। उं स्वापनाय०। उं स्व  
वशाय०। उं व्यापिने०। उं नैकात्मने०। उं नैकक

१३

मल्लिते०। उं वसराय०। उं वसलाय०। उं वसिने०।  
उं रत्नगर्भाय०। उं धनेश्वराय०। उं धर्मगुप्ते०। उं  
धर्मल्लिते०। उं धर्मिणे०। उं सते०। उं असते०। उं  
हाराय०। उं अहाराय०। उं अविज्ञात्रे०। उं सहस्रां  
शवे०। उं विधात्रे०। उं लतल्लहणाय०। उं गभ  
स्तिनेमये०। उं सत्वस्थाय०। उं सिंहाय०। उं भूत  
महेश्वराय०। उं आदिदेवाय०। उं महादेवाय०।



ॐ देवेशाय० ॐ देवनृदुरवे० ॐ उत्तराय० ॐ गो  
पतये० ॐ गोघ्ने० ॐ ज्ञानगम्याय० ॐ पुरातना  
य० ॐ शरीरनृतनृते० ॐ भोक्त्रे० ॐ कपीन्द्राय०  
ॐ भूरिदह्निणाय० ॐ सोमपा० ॐ अमृतपाय  
० ॐ सोमाय० ॐ पुरुजिते० ॐ पुरुसन्नमाय०  
ॐ विनयाय० ॐ जयाय० ॐ सत्यसंधाय० ॐ  
दाशाहयि० ॐ सात्वतापतये० ॐ जीवाय० ॐ १४

विनयितासाह्निणे० ॐ मुकुंदाय० ॐ अमितवि  
क्रमाय० ॐ अंभोनिधये० ॐ अनंतात्मने० ॐ  
महोदधिशाय० ॐ अंतकाय० ॐ अजाय०  
ॐ महाहयि० ॐ स्वानात्माय० ॐ जितामित्राय०  
ॐ प्रमोदनाय० ॐ आनंदाय० ॐ नंदनाय० ॐ न  
दाय० ॐ सत्यधर्मयि० ॐ त्रिविक्रमाय० ॐ मह  
र्षिकपिलाचार्याय० ॐ रुतज्ञाय० ॐ मेदिनी



पतये०। उत्रिपदाय०। उत्रिदशाध्यज्ञाय०। उ०  
 महाशृंगाय०। उ० कृतान्तकृते०। उ० महावराहा  
 य०। उ० गोविंदाय०। उ० सुषेणाय०। उ० कनकांग  
 दिने०। उ० गुह्याय०। उ० गनीराय०। उ० गहनाय०।  
 उ० गुप्ताय०। उ० चक्रगदाधराय०। उ० वेधसे०। उ०  
 स्वांगाय०। उ० अजिताय०। उ० ललाय०। उ० दृढाय०। १५  
 उ० संकर्षणाय०। उ० अच्युताय०। उ० वरुणाय०। उ०

वारुणाय०। उ० वृक्षाय०। उ० पक्षराक्षाय०। उ० म  
 दामनसे०। उ० नगवते०। उ० नगघ्ने०। उ० नंदिने०।  
 उ० वनमालिने०। उ० रुक्मायुधाय०। उ० आदित्या  
 य०। उ० ज्योतिरादित्याय०। उ० सहस्रवे०। उ० गति  
 सत्तमाय०। उ० सुधन्वने०। उ० खंडपरशवे०। उ० दा  
 रुणाय०। उ० द्रविणप्रदाय०। उ० दिवस्पृशे०। उ०  
 सर्वदृग्यासाय०। उ० वाचस्पतये०। उ० निजामाय०।

श्रयो१



त्रिसाम्ने०। उंसामगाय०। उंसाम्ने०। उन्निर्वाणाय  
०। उन्नेषजाय०। उन्निषजे०। उंसंज्ञासत्तये०। उ  
शमाय०। उंशांताय०। उन्निष्ठाये०। उंशांतये०। उ  
परायणाय०। उंशुभांगाय०। उंशांतिदाय०। उंस  
ष्टे०। उंऊमुदाय०। उंवलेशाय०। उंगोहिताय०। उं  
गोपतये०। उंगोमे०। उंवृषभाहाय०। उंवृषप्रिया  
य०। उंअनिवर्त्तिने०। उंनिवृत्तात्मने०। उंसंज्ञेष्टे०। १६

उंहेमस्तये०। उंशिवाय०। उंश्रीवसवस्तुसे०। उं  
श्रीवासाय०। उंश्रीपतये०। उंश्रीमतांवराय०।  
उंश्रीदाय०। उंश्रीशाय०। उंश्रीनिवासाय०।  
उंश्रीधराय०। उंश्रीकराय०। उंश्रीयसे०। उंश्री  
मते०। उंलोकत्रयाश्रयाय०। उंस्वहाय०। उं  
स्वंगाय०। उंशतानंदाय०। उंनंदये०। उंज्योति  
र्गणेश्वराय०। उंविजितात्मने०। उंविधेयात्म



ने०।उसकीर्तये०।उच्छिन्नसंशयाय०।उउदीर्णा  
य०।उसर्वतश्चक्षुषे०।उअनीशाय०।उशास्त्र  
तस्तिराय०।उभूषयाय०।उभूषणाय०।उभू  
तये०।उविशोकाय०।उशोकनाशनाय०।उअ  
चिष्मते०।उअचिताय०।उकुंभाय०।उविप्रदा  
त्मने०।उविशोधनाय०।उअनिरुद्धाय०।उअ १७  
प्रतीरथाय०।उप्रद्युम्नाय०।उअमितविक्रमा

य०।उकालनेमिघ्ने०।उवीराय०।उशौरये०।उ  
सूरजनेश्वराय०।उत्रिलोकात्मने०।उत्रिलो  
केशाय०।उकेशवाय०।उकेशिघ्ने०।उदूरये०।  
उकामदेवाय०।उकामपालाय०।उकामिने०।  
उकांताय०।उललागमाय०।उअनिर्देश्यवपु  
षे०।उविस्तवे०।उवीराय०।उअनन्ताय०।उध  
नंजयाय०।उब्रह्मण्याय०।उब्रह्मलने०।उब्रह्म



ले०। उ० ब्रह्म ले०। उ० ब्रह्म विवर्धनाय०। उ० ब्रह्म  
विदे०। ब्राह्मणाय०। उ० ब्राह्मिणे०। उ० ब्रह्मज्ञा  
य०। उ० ब्राह्मणप्रियाय०। उ० महाक्रमाय०। उ० म  
हाकर्मणे०। उ० महातेजसे०। उ० महोरगाय०। उ०  
महाक्रतवे०। उ० महायज्ञने०। उ० महायज्ञाय०।  
उ० महाहविषे०। उ० स्रव्याय०। उ० स्रवप्रियाय०। २८  
उ० स्तोत्राय०। उ० सुतये०। उ० स्तोत्रे०। उ० रणप्रियाय०।

उ० पूरणाय०। उ० पूरयित्रे०। उ० पुण्याय०। उ० पुण्यकी  
र्तये०। उ० अनामयाय०। उ० मनोजवाय०। उ० तीर्थ  
कराय०। उ० वसुरेतसे०। उ० वसुप्रियाय०। उ० वसु  
प्रदाय०। उ० वासुदेवाय०। उ० वसवे०। उ० वसुमन  
से०। उ० हविषे०। उ० सप्ततये०। उ० सत्ततये०। उ० स  
त्ताये०। उ० सप्ततये०। उ० सत्परायणाय०। उ० शरसे  
नाय०। उ० यदुश्रेष्ठाय०। उ० सन्निवासाय०। उ० सुया



मुनाय०॥ उं भूतावासाय०॥ उं वासुदेवाय०॥ उं स  
वसुनिलयाय०॥ उं अनलाय०॥ उं दर्पिणाय०॥ उं दर्पि घ्न  
दाय०॥ उं दृष्टाय०॥ उं उधराय०॥ उं अपराजिताय०॥  
उं विश्वमूर्तये०॥ उं महामूर्तये०॥ उं दीप्तमूर्तये०॥  
उं अमूर्तिमितये०॥ उं अनेकमूर्तये०॥ उं अच्युताय०॥  
उं शतमूर्तये०॥ उं शताननाय०॥ उं एकाय०॥ उं नैका १॥  
य०॥ उं सवाय०॥ उं काय०॥ उं किमे०॥ उं यदे०॥ उं तदे०॥

उं पदायातुतमाय०॥ उं लोकबंधवे०॥ उं लोकना  
थाय०॥ उं माधवाय०॥ उं नक्तवसलाय०॥ उं सु  
वर्णवर्णाय०॥ उं इमांगाय०॥ उं वरांगाय०॥ उं चं  
दनांगदिने०॥ उं वीरघ्ने०॥ उं विषमाय०॥ उं सून्या  
य०॥ उं धृताशिषे०॥ उं अचलाय०॥ उं चलाय०॥ उं  
अमानिने०॥ उं मानदाय०॥ उं मान्याय०॥ उं लोक  
स्वामिने०॥ उं त्रिलोकधृषे०॥ उं सुमेधसे०॥ उं मे



धजाय०। उधन्याय०। उसत्यमेधसे०। उधराध  
राय०। उतेजोवृषाय०। उधृतिधराय०। उसर्व  
शस्त्रभृतां वराय०। उप्रग्रहाय०। उनिग्रहाय०।  
उव्यग्राय०। उनैकशृंगाय०। उगदाग्रजाय०। उ  
चतुर्मूर्तये०। उचतुर्बाहुवे०। उचतुर्व्यूहाय०। उ  
चतुर्गतये०। उचतुरात्मने०। उचतुर्नावाय०। २०  
उचतुर्वेदविदे०। उएकपादे०। उसमावर्तये०।

उमिहृतात्मने०। उडर्जयाय०। उडरतिक्रमाय०।  
उडर्लनाय०। उडर्गमाय०। उडर्गाय०। उडरावा  
साय०। उडरारिघ्ने०। उशुभांगाय०। उलोकसारं  
गाय०। उसुतंतवे०। उतंतुर्वर्धनाय०। उइंद्रकर्म  
णे०। उमहाकर्मणे०। उश्रुतकर्मणे०। उश्रुतागमा  
य०। उउद्गवाय०। उसुंदराय०। उसुंदाय०। उरत्न  
नाभाय०। उसुलोचनाय०। उअकयि०। उवजस



नाय०। उं हं गिणे०। उं जयंताय०। उं सर्वविजयि  
ने०। उं सुवर्णीविंदवे०। उं अहो न्याय०। उं सर्ववा  
गीश्वराय०। उं महाहृदाय०। उं महागतिाय०। उं  
महानूताय०। उं महानिधये०। उं कुमुदाय०। उं  
कुंदराय०। उं कुंदाय०। उं पर्जन्याय०। उं पावना  
य०। उं अनिलाय०। उं अमृतांशाय०। उं अमृत  
वपुषे०। उं सर्वज्ञाय०। उं सर्वतोमुखाय०। उं सु

२१

लनाय०। उं सुव्रताय०। उं सिद्धाय०। उं शत्रुजि  
ते०। उं शत्रुतापनाय०। उं न्यग्रोधाय०। उं उडुंब  
राय०। उं अश्वत्थाय०। उं चां एरांध्रनिषूदनाय०।  
उं सहस्रार्चिषे०। उं समजिह्वाय०। उं समैधसे०।  
उं समवाहनाय०। उं अमृत्त्रये०। उं अनघाय०। उं  
अचिंत्याय०। उं नयल्लते०। उं नयनाशनाय०। उं  
अणवे०। उं हृदते०। उं हृशाय०। उं स्फुलाय०। उं गु



लभते०॥ॐनिर्गुणाय०॥ॐमहते०॥ॐअधुनाय०॥  
ॐस्वधुनाय०॥ॐस्वास्याय०॥ॐप्रायशाय०॥ॐवं  
शवर्धनाय०॥ॐभारभृते०॥ॐकथिताय०॥ॐयो  
गिने०॥ॐयोगीशाय०॥ॐसर्वकामदाय०॥ॐआ  
श्रमाय०॥ॐश्रमणाय०॥ॐक्षामाय०॥ॐसुपण  
य०॥ॐवायुवाहनाय०॥ॐधनुर्धराय०॥ॐधनुर्व  
दाय०॥ॐदंडाय०॥ॐदमयित्रे०॥ॐदमनाय०॥ॐ २२

अपराजिताय०॥ॐसर्वसहाय०॥ॐनियंत्रे०॥ॐ  
नियमाय०॥ॐयमाय०॥ॐसेत्ववते०॥ॐसात्वि  
काय०॥ॐसत्याय०॥ॐसत्यधर्माय०॥ॐअनिप्रा  
याय०॥ॐप्रियाह्वयि०॥ॐअह्वयि०॥ॐप्रियस्तने०॥  
ॐप्रीतिवर्धनाय०॥ॐविहायसगतये०॥ॐज्यो  
तिषे०॥ॐसुरुचये०॥ॐकृतज्ञे०॥ॐविभवे०॥  
ॐरचये०॥ॐविरोचनाय०॥ॐसूर्याय०॥ॐसवि



ॐ॥ ॐ रविलोचनाय॥ ॐ अनेताय॥ ॐ कृतउजे॥  
 ॐ भोक्त्रे॥ ॐ सुखदाय॥ ॐ नैकजाय॥ ॐ अय  
 जाय॥ ॐ अनिर्विमाय॥ ॐ सदामर्षिणे॥ ॐ जो  
 ना काधिष्ठा॥ ॐ अद्रुताय॥ ॐ सनातनाय॥ ॐ  
 सनातनतमाय॥ ॐ कपिलाय॥ ॐ कपये॥ ॐ अ  
 व्ययाय॥ ॐ स्वस्तिदाय॥ ॐ स्वस्तिरुते॥ ॐ स्वस्त  
 ये॥ ॐ स्वस्तिउजे॥ ॐ स्वस्तिदक्षिणाय॥ ॐ अरो २३

प्राय॥ ॐ कुंडलिने॥ ॐ चक्रिणे॥ ॐ विक्रमिणे॥  
 ॐ कृतिशसनाय॥ ॐ शब्दातिगाय॥ ॐ शब्द  
 सदाय॥ ॐ शिशिराय॥ ॐ शर्वरीकराय॥ ॐ अ  
 कूराय॥ ॐ पेशलाय॥ ॐ दहाय॥ ॐ दक्षिणा  
 य॥ ॐ ह्रमिणां वराय॥ ॐ विद्वत्तमाय॥ ॐ वी  
 तनयाय॥ ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय॥ ॐ उत्तार  
 णाय॥ ॐ उः कृतिघ्ने॥ ॐ पुण्याय॥ ॐ उः स्वप्ना नाशना



य०। उ० वीरघ्ने०। उ० रङ्गणाय०। उ० शान्ताय०। उ० जी  
वनाय०। उ० पर्यवस्थिताय०। उ० अनंतरूपाय०। उ०  
अनंतप्रिये०। उ० जितमन्यवे०। उ० नयापदाय०। गी  
उ० चतुरस्त्राय०। उ० गभीरात्मने०। उ० विदिशाय०।  
उ० व्यादिशाय०। उ० दिशाय०। उ० अनादये०। उ० भुवे  
०। उ० भुवोलक्ष्म्ये०। उ० सुवीराय०। उ० रुचिरांगदाय०  
०। उ० जननाय०। उ० जनजन्मादये०। उ० नीमाय०। २४

उ० नीमपराक्रमाय०। उ० आधारनिलये०। उ० धाया  
राना०। उ० पुष्पहासाय०। उ० प्रजागराय०। उ० अध्वगा  
०। उ० शान्त्यथाचाराय०। उ० प्राणदाय०। उ० प्रणवा  
ण०। उ० पणाय०। उ० प्रमाणाय०। उ० प्राणनिलयाय०  
य०। उ० प्राणनृते०। उ० प्राणजीवाय०। उ० तत्वाय०। उ०  
मतत्त्वविदे०। उ० एकात्मने०। उ० जन्ममृत्युजरातिगा  
य०। उ० नृनुविस्वस्तरवे०। उ० ताराय०। उ० सवित्रे०।



ॐ प्रपितामहाय० ॥ ॐ अयज्ञाय० ॥ ॐ यज्ञयतये० ॥  
 ॐ यज्ञिने० ॥ ॐ यज्ञांगाय० ॥ ॐ यज्ञवाहनाय० ॥ ॐ  
 ॐ नृते० ॥ ॐ यज्ञलते० ॥ ॐ यज्ञिने० ॥ ॐ यज्ञकुजे  
 ॐ यज्ञसाधनाय० ॥ ॐ यज्ञांलते० ॥ ॐ यज्ञगुह्याय० ॥ त  
 ॐ अज्ञानाय० ॥ ॐ अन्नदाय० ॥ ॐ आत्मयोनये  
 ॐ स्वयंजाताय० ॥ ॐ वैखानाय० ॥ ॐ सामगाय० ॥ २५  
 ॐ देवकीनंदनाय० ॥ ॐ स्वष्टे० ॥ ॐ द्वितीयाय० ॥ ॐ पा

ॐ शानाय० ॥ ॐ शंखनृते० ॥ ॐ नंदकिने० ॥ ॐ च  
 ॐ शाङ्गधन्विने० ॥ ॐ गदाधराय० ॥ ॐ रथा  
 ॐ अहो न्यायनमः ॥ ॐ सर्वप्रहरणा  
 ॐ यनमो नमः ॥ १००० ॥ ॥ इति विष्णुसहस्र  
 ॐ मावलिः संपूर्ण ॥ ॥ संवत् १८२२ नाज्ये  
 ॐ चदीश सोमेलिखितं दी० ॥ करुणाशंकरेण ॥ २६  
 ॥ श्री ॥ ॥ छ ॥ ॥ मंगलमस्तु ॥ ॥ श्री ॥



दीनमयशंकर